भगवान श्री रजनीश

## भूमिका

मैं प्रमाण हूं

ऐसा संयोग कभी-कभी ही घटित होता है जब अस्तित्व और भगवत्ता किसी व्यक्ति में स्वयं को पूर्णता में अभिव्यक्त करती है। भगवान श्री रजनीश में भगवत्ता की अभिव्यक्ति इस विरल संयोग की नवीनतम घटना है!

"भगवान श्री रजनीश" आज एक उत्सव का नाम है। वे मनुष्य के सौभाग्य का पर्याय है। चेतनाओं के भाग्योदय का निमित्त हैं वे। वे एक सुअवसर हैं। उनको चूकना परम दुर्भाग्य है-उन्हें उपलब्ध करना और उनको उपलब्ध होना जीवन की सार्थकता एवं परम धन्यता!

असंखय प्रकार के सत्यान्वेषकों को अलग-अलग भिन्न-भिन्न अनुकूल बोध और मार्गदर्शन देने की क्षमता उन्हीं की प्रज्ञा में है। इतने विराट और विशाल समूह को मुक्ति-पथ पर ले जाने का उत्तरदायित्व उन्हीं की करुणा में है। प्रज्ञा और करुणा का ऐसा मिलन अभूतपूर्व है-अद्वितीय है!

भगवान कहते हैंः "मैंने किसी से प्रेरणा नहीं ली। हां, जब पूर्ण का अवतरण हुआ, जब मेरा अंतर आकाश प्रकाश से भर गया, तब मैंने जाना कि ऐसा ही बुद्ध को हुआ था; तब मैं पहचाना कि ऐसा ही महावीर को हुआ था; तब कबीर में भी मुझे वही झलक मिली-और जीसस में और जरथुस्त्र में और लाओत्सु में। लेकिन मैं उनका गवाह हूं, वे मेरे प्रेरणास्रोत नहीं हैं। इस बात को मैं बहुत स्पष्ट कर देना चाहता हूं। उनकी प्रेरणा पाकर मैं यहां नहीं पहुंचा हूं। यहां पहुंचकर मैंने उन को गवाही दी है कि हां वे ठीक हैं। मैंने जानकर कहा है कि वे ठीक हैं। मैंने उनको मानकर ठीक नहीं जाना है। जाना पहले हैं, फिर उनको ठीक कहा है। मैं उनका प्रमाण हूं, उनका गवाह हूं, उन का साक्षी हूं। अब मैं कह सकता हूं कि वे ठीक हैं।"